ऋतुराज का आगमन

भाव के वो शब्द सागर, ज्वार बनकर आ रहे
आ रहे ऋतुराज देखो ,प्रकृति स्वागत गा रहे
फूलों के मकरंद पर बैठा हुआ यह कौन है
फाग के संग खेलता आंखें मिलता कौन है
भाव सारे प्रश्न बनकर आज बस इठला रहे हैं
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे हैं

तितलियों के पंख पर उभरा हुआ वह चिन्ह है
आम कि वह नव नवेली पत्तियों का ठोर है
आज सारे अली मिलकर बस यही है गा रहे
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे

जिसके आते ही सभी है द्विग दिशाएं जाग जाती
प्रेम का वह रूप धरकर हर हृदय को है जगती
खेत में फूली हुई सरसों गवाही दे रहे है
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे हैं

हर घड़ी हर क्षण को है जिसने सुगंधित सा बनाया
प्यार का वह रूप धरकर है बसंत बनकर जो आया
छा गया उन्माद देखो कोयल भी गा रहे
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे है

है गुलालो में छिपा इसकी कहानी जान लो
है सभी ऋतुओं का राजा अब तो तुम पहचान लो
रूप की रानी भी जिसके सामने फीकी लगे
उसके होने की नियत भी अब गवाही दे रहे हैं
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे हैं

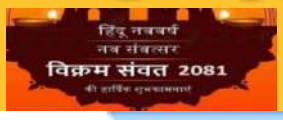

आइए स्वागत में हम भी बैठकर कविता बनाएं
फिर इस कविता को ही गा गा के हम सबको सुनाएं
आज पुष्कर की कलम उसको बलाई दे रहे हैं
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे हैं
भाव के वह शब्द सागर ज्वार बनकर आ रहे हैं
आ रहे ऋतुराज देखो प्रकृति स्वागत गा रहे हैं
प्रकृति स्वागत गा रहे हैं

पुष्कर तिवारी